**अखिल भारतीय क्षत्रिय खंगार समाज सेवा समिति कोटा संभाग के सम्मेलन में माननीय अध्यक्ष का सम्बोधन**

---

गिरि समान गौरव रहे, सिन्धु समान स्नेह,

वन समान वैभव रहे, ध्रुव समान ध्येय।

विजय-पराजय ना लखै यम ना पावे पंत,

जय-जय भूमि जुझौति की होय जूझ के अंत !!

जय जुझौति – जय महाराजा खेत सिंह खंगार।

जय कुलदेवी मां गजानन की।

खंगार समाज रणबांकुरे क्षत्रियों का समाज रहा है। मैंने कहीं पढ़ा कि खंगार शब्द का अर्थ है, तलवार चलाने में माहिर बुंदेलखंड की एक योद्धा जाति। क्षत्रिय खंगार समाज का इतिहास वीरता व बलिदान से समृद्ध रहा है।

12वीं सदी में जब हमारा देश विदेशी आक्रान्ताओ और घुसपैठियों का सामना कर रहा था, तब जूनागढ नरेश रूद्रदेव खंगार के राजकुमार महाराजा खेत सिंह खंगार पृथ्वीराज चौहान के सहयोगी व सहभागी बने।

पृथ्वीराज चौहान के साथ खेत सिंह खंगार ने अपने पराक्रम, शौर्य और वीरता का प्रदर्शन किया। पृथ्वीराज चौहान ने खेतसिंह खंगार के सेनापतित्व में कई युद्ध लड़े।

खेत सिंह खंगार की वीरता से प्रभावित होकर पृथ्वीराज चौहान ने उनको महोबा शासक के रूप में मान्यता दी। 16 बार मुहम्मद गौरी को माफ कर देने के बाद सत्रहवी बार 1192 में छल से गौरी ने पृथ्वीराज चौहान को बंदी बना लिया और काबुल ले गया।

जब चौहान राज्य का अंत हो गया तब महाराजा खेत सिंह खंगार ने जुझौती खंड में स्वतन्त्र राज्य की स्थापना की। गढ़-कुण्डार में खेत सिंह खंगार की पाँच पीढियों ने 165 वर्ष तक सुचारू राज्य संचालन किया।

खंगार क्षत्रिय वंश के राजाओं ने छठवीं शताब्दी से 1472 ईसवीं तक अनेक विदेशी आक्रांताओं (महमूद गजनवी, अलाउद्दीन खिलजी व मुहम्मद तुगलक) से युद्ध किए। भारत की संस्कृति और धार्मिक आस्था के केन्द्र सोमनाथ मंदिर की रक्षा कर जीर्णोद्धार भी कराया।

आमेर नरेश पृथ्वीराज जी के एक पुत्र जगमाल जी थे। जगमाल जी का जन्म विक्रमी संवत् 1564 को हुआ था। इन्हें भाईबंट में साईवाड़ का ठिकाना मिला था। जगमाल जी का एक विवाह उमरकोट में सोढ़ो के यहां हुआ था इनकी कुँवरानी का नाम आसलदे था जिसने अपने नाम पर आसलपुर बसाया था। जगमाल जी ने साईवाड़ दान में दे दिया था इसलिए इन्होंने अपनी कोटड़ी आसलपुर में बनवाई तथा डूंगर पर किला बनवाया था।

जब इनके पिता आमेर नरेश पृथ्वीराज जी राणा सांगा के साथ बाबर से युद्ध करने गये थे तब ये भी उनके साथ थे। जब बादशाह हुमायूं शेरशाह सूरी से हारकर सिन्ध में भाग गया था तब उमरकोट के शासक को कहकर जगमाल जी ने उसे वहां शरण दिलवाई थी। 1562 ईस्वी में जब आमेर के राजा भारमल जी ने मुगलों की अधीनता स्वीकार की थी तब जगमाल जी भी उनके साथ में थे।

जगमाल जी को बादशाह के सामने जब पेश किया गया तब बादशाह ने जगमाल जी को मनसब प्रदान कर उन्हें जागीर में नराणा ठिकाना दिया। ई. 1563 में बादशाह अकबर ने जगमाल जी को मेरठ का किलेदार बनाया था। बादशाह के तीसवें शासनकाल में ई. 1586 में इन्होंने टांडा में नोरोज बेग से मुकाबला किया वहां यह वीरगति को प्राप्त हुए थे। जगमालजी की स्मृति में आसलपुर में छतरी बनी हुई है। जगमाल जी के पांच पुत्र थे जिनमें महाराव खंगार जी सबसे बड़े पुत्र थे, जगमाल जी की मृत्यु होने पर पर यह नराणां के स्वामी हुए।

इन्हीं महाराव खंगार जी के वंशज खंगारोत कच्छावा कहलाते हैं। गुजरात पर जब बादशाह अकबर ने प्रथम आक्रमण किया था, तब महाराव खंगार जी बादशाह अकबर के साथ थे। बादशाह अकबर ने जब गुजरात पर दूसरी बार आक्रमण किया था तब राजधानी का प्रबन्ध राजा भारमाल जी को सौंपा गया था। इब्राहिम हुसैन मिर्जा गुजरात में हारने के बाद नागौर होता हुआ दिल्ली की तरफ बढ़ा तब राजा भारमल ने खंगार जी को सेना देकर भेजा। महाराव खंगार जी के जाने पर इब्राहिम हुसैन वहां से भाग गया। खंगार जी की सेना कांगड़ा भेजी गई जिसके साथ वे भी गये।

जब इब्राहिम हुसैन मिर्ज़ा ने पंजाब में उत्पात मचाया तब कांगड़ा की सेना उसको दबाने को भेजी गई। महाराव खंगार जी भी उस सेना में थे। मुलतान आदि स्थानों पर उससे युद्ध हुए, अन्त में इब्राहिम हुसैन मिर्जा पकड़ा गया। हल्दीघाटी के युद्ध में खंगार जी मानसिंह के साथ थे। गागरोन के खीचियों के विरुद्ध भी खंगार जी गये थे। बादशाह ने जब पटना पर हमला किया तब भी खंगार जी साथ में थे।

जब बूंदी के राव सुरजन हाड़ा के पुत्र दूदा ने बगावत की, तब खंगार जी को सेना देकर उनके विरुद्ध भेजा गया था। महाराव खंगार जी ने दूदा हाड़ा का झंडा छीन लिया था और बादशाह अकबर को पेश किया था। बादशाह ने वह झंडा खंगार जी को बख़्श दिया था। तब से खंगारो का वही झंडा है। यह लाल रंग का है तथा इसमें सुनहरी फूल है। फिर खंगार जी को शाहबाज खां के साथ बंगाल में तैनात किया गया।

जब बादशाह पंजाब में गये थे तब खंगार जी उनके साथ में ही थे। खंगार जी ने कुछ मुसलमान बनाई हुई स्त्रियों को वापस हिन्दू बनाया था। नराणां के अलावा पुरमांडल भी इनकी जागीर में था। इनका मनसब 2000 तक हो गया था। उनकी मांडलपुर में मृत्यु होना मानते हैं। इनकी 7 रानियां इनके साथ में ही सती हुई थी। महाराव खंगार जी के पन्द्रह लड़के थे।

उनके नाम इस प्रकार है- 1. नारायणदास नराणां 2. राघोदास धाणा 3. बैरसल गुढ़ा 4. मनोहरदास जोबनेर 5. बाघसिंह कालख 6. बुधसिंह 7. हम्मीरसिंह धाधोली 8. भाखरसिंह साखूण 9. किसनदास तूदेड़ 10. अमरसिंह पानव 11. केशोदास मोरड़ 12. सबलसिंह सीलावत 13. गोविन्ददास 14. तिलोकसिंह कमाण 15.बिहारीदास। महाराव खंगार जी के बड़े पुत्र नारायणदास जी उनके बाद नराणां के स्वामी हुए, नारायणदास के एक पुत्र को सोड़ावास का ठिकाना मिला था।

नारायणदास के बड़े पुत्र दुर्जनसाल ने नरूकों से रहलाणा विजय किया था। इनके वंश में रहलाणा और हरसोली ताजीमी ठिकाने थे। महाराव खंगार जी के तीसरे पुत्र बैरसल को गुढ़ा दिया गया था। अजमेर के मुहम्मद मुराद ने जब खंगारोतों के नराणा पर हमला किया था तब खंगार जी का पुत्र बैरसल युद्ध करके काम आया था। बैरसल का पुत्र केसरीसिंह नाथावतों के युद्ध में काम आया था। बैरसल के पुत्र उगरसिंह ने उगारियावास बसाया था। उसके वंश में उगरियावास का ठिकाना था। यह ताजीमी ठिकाना था।

उगरियावास के ठाकुर गजसिंह के छोटे पुत्र पहाड़सिंह के वंश में गुढा ठिकाना था। उगरियावास के गजसिंह के तीसरे पुत्र नाथजी के वंश में नवाण का ठिकाना था। खंगारजी

के चौथे पुत्र मनोहरदास जी को जागीर में जोबनेर मिला था। इनके वंशज मनोहरदासोत खंगारोत कहलाते हैं।

मनोहरदास का छोटा पुत्र प्रतापसिंह मंढा ठिकाने का स्वामी हुआ, मंढा ताजीमी ठिकाना था। मंढा का ठाकुर भीमसिंह बड़ा प्रतापी था। विक्रमी संवत 1885 में वह रामगढ़ के लाड़खानियों की मदद पर गया था, जिनका मेड़तियों से युद्ध हो रहा था। उस युद्ध में भीमसिंह घायल हुआ। मनोहरदास के द्वितीय पुत्र प्रतापसिंह के वंश में मंढा और भादवा ताजीमी ठिकाने थे। खास चौकी के ठिकाने डोडी, कोठी प्रतापपुरा, दयालपुरा, जैसिंहपुरा, सिरानोड़ियां आदि थे।

मनोहरदास की मृत्यु होने पर उनके ज्येष्ठ पुत्र जैतसिंह को जागीर में जोबनेर मिला था। जैतसिंह को छोटा मनसब मिला हुआ था। यह जोबनेर की ज्वाला माई का परम भक्त था, ज्वाला माई का यह शक्तिपीठ बहुत प्राचीन है। जैतसिंह पर जब अजमेर से मुराद ने चढ़ाई की तो जैतपुर में जैतसिंह ने मुगल सेना का मुकाबला किया। यह युद्ध ई. 1649 में हुआ था, इस युद्ध में मुराद मारा गया था।

खंगारोतों ने साम्भर तक मुगल सेना का पीछा किया था। इस युद्ध में ठाकुर जैतसिंह का पुत्र कल्याणसिंह और उसके भाई सुजानसिंह का पुत्र विजयसिंह काम आये थे। जोबनेर के ठाकुर बनेसिंह अपने तीन पुत्रों रामसिंह, भारतसिंह और संग्रामसिंह सहित मावंड़ा के युद्ध में काम आये थे।

ठा. लम्पू_सिंह_खंगार – सन 1857 ई. के स्वतंत्रता संग्राम में महारानी लक्ष्मीबाई की ओर अपने "कुँवर दल" के काफिले को लेकर अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे जो जिला पिछोर मध्यप्रदेश के जागीरदार थे झाँसी की रानी उन्हें कक्का जू नाम से सम्मान करती थीं ।

वीरांगना सहोदराबाई राय – आधुनिक लक्ष्मीबाई के नाम से जानी जाने वाली गोवा आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाई गिरते तिरंगा झण्डे को ऊंचा बनाये रखने के कारण पुर्तगालियों ने उनके हाथ ,पेट ,तथा कमर पर गोलियां चलाकर उन्हें भूनकर रख दिया परंतु शक्ति की प्रतीक  वीरांगना ने तिरंगे झण्डे को नीचे गिरने नहीं दिया। इन्हें जवाहरलाल नेहरु व इन्दिरा गांधी सदैव सम्मान की दृष्टि से देखते थे। सहोदराबाई राय सागर से लगभग 20 वर्ष सांसद रहीं। भारत सरकार ने सागर की महिला प्रौद्योगिकी विद्यालय को उनके नाम से सम्मानित किया व निवेदन अनुसार मध्यप्रदेश में खंगार क्षत्रिय समाज को सामान्य कैटेगरी से अनुसूचित जाति में शामिल करने हेतु महत्वपूर्ण निर्णय लिया।

स्व.बाबू कामता प्रसाद खंगार – समाजवादी विचारधारा से प्रभावित व मध्यप्रदेश में किसान आंदोलन के प्रणेता पं जवाहरलाल नेहरू व पं शंकर दयाल शर्मा ( भू पूर्व राष्ट्रपति ) के साथ मिलकर खेतिहर किसानों में जागृति लाकर आधुनिक भारत के निर्माण में अप्रतिम योगदान दिया। भोपाल राज्य शासन में वे दो बार मन्त्री बनाये गये ।

स्व.बाबू महादेव खंगार क्रांतिकारी – गरम दल के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे वो अंग्रेजों के लिए हमीरपुर में चुनोतीपूर्ण साबित हुए एवं कदौरा के नवाबों के ख़िलाप जंग छेड़ दी थी जिसमें उनके पन्द्रह साथी शहीद हुए थे सन 1952 में हमीरपुर से निर्विरोध चैयरमैन बने एवं खुद को हमीरपुर नगर संस्थापक राजा हमीरदेव खंगार के वंशज मानते थे। पत्नी पार्वती के निधन का अन्तिम संस्कार भी भारत सरकार के सरकारी अधिकारियों के द्वारा राजकीय सम्मान के साथ किया गया ।

स्व.रघुनाथ सिंह खंगार – नेता जी सुभाष चन्द्र बोस के साथ मिलकर अंग्रेजों के खिलाफ कई लड़ाइयां लड़ी जिसमे वो अपना दायां कान भी खो चुके थे देश की आजादी के आक्रोश में हो रहे आंदोलन में अग्रणी भूमिका निभाई जिससे वो जेल भी गये लेकिन वहाँ से भाग निकले और स्वाधीनता संघर्ष में भूमिका निभाई।